Episode - 18

एपिसोड शीर्षक :

<u>मेरा प्यारा वॉटसन</u>

स्क्रिप्ट : Dr Manas Pritam Das

हिंदी अनुवाद : Shriniwas Oli

अवधारणा और समन्वय: B.K.Tyagi

(आराधना अपार्टमेंट में हर साल होली के उत्सव का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ही होता है। आमतौर पर इस मौके पर आखिरी प्रस्तुति के तौर पर अपार्टमेंट के निवासी एक नाटक पेश करते हैं। इस बार शरलॉक होम्स की कहानी पर आधारित नाटक का मंचन किया जा रहा है। अभी दर्शकों के सामने नाटक के समापन का दृश्य है और तीन पात्र मंच पर हैं.. जासूस होम्स, उनका सहायक डॉक्टर वाटसन और मंगेतर मैरी)

पात्र

होम्स (आयु 25, पुरुष)

वॉटसन (वही उम्र पुरुष)

मैरि (लेडी सेम एज)

सुनील गर्ग, उम्र 44 वर्ष

Barnali, रंजन, Ranita, सुधीर

अभय और नापुर (एक से अधिक पात्रों को एक ही कलाकार द्वारा निभाया जा सकता है।)

होम्स : क्या तुमको अंगूठी मिल गई है वॉटसन ?

वॉटसन : हां... वो तो मिलनी ही थी।

होम्स : जरा दिखाओ मुझे..। और तुम इतने परेशान क्यों नजर आ रहे हो ? तुम अभी दो सौ एक्कीस..बी, बेकर स्ट्रीट (221-B Baker Street) में मेरे ड्राइंग रूम में हो। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि ये तुम्हारे अपने घर से भी बेहतर है। घबराओ मत...। जल्दी से मुझे अंगूठी दिखाओ।

वॉटसन : ये रही...।

होम्स : वाह.. शानदार..। लेकिन इसमें तो हीरा नाममात्र का ही है।

वॉटसन : हां, अभी तो मेरे बस का यही है.. जबतक कि...

होम्स : जबतक कि तुम और मेहनत नहीं कर लेते। क्यों.. सही कहा ना।

वॉटसन : सही-गलत छोड़िए... अभी आप अपनी बात कहिए... आप क्या चाहते हो ?

होम्स : मैं चाहता हूं कि तुम इसे... इससे बदल लो...। ये बोहेमिया (Bohemia) के राजा ने मुझे दिया था।

वॉटसन : वाह... कितना खूबसूरत गुलाबी हीरा है...बेमिसाल..।

(इससे पहले कि ये बातचीत आगे बढ़ती... दरवाजा खटखटाने की आवाज़ आती है)

होम्स : ये लो... मैरी भी आ गई..।

(होम्स जोर से अंगूठी के बॉक्स को पटक कर जोर से बंद करता है)

होम्स : इस अंगूठी पर तो मैरी का ही हक है। इस अंगूठी से उसकी सुंदरता और निखर जाएगी।

(होम्स दरवाजा खोलता है / सजी-धजी मैरी के हाथ में एक हरा पैकेट है)

होम्स : (कुछ धीमे स्वर में) देखो वॉटसन..। वो कितनी सुंदर लग रही है। (सामान्य स्वर) आओ मैरी.. आओ।

मैरी : (अंदर आते हुए) तुम दोनों के लिए मैं कुछ लेकर आई हूं। **(बैग से पैकेट निकालने की आवाज़)** ये लो होम्स.. एक पैकेट तुम्हारे लिए और ये एक पैकेट तुम्हारे लिए.. वॉटसन।

वॉटसन : क्या है ये ?

होम्स : अरे रुको..। मैं बताता हूं। **(तुक्का लगाने के अंदाज़ में)** मेरे ख्याल से... इसमें.. हाथीदांत से बना हुआ कोई कीमती.... अंग्रेजी के टी (T) आकार का.... कुछ...।

वॉटसन : होम्स, ये तो आप बेमतलब का तुक्का लगा रहे हैं।

होम्स : शायद तुम्हारा अंदाजा सही है.. वॉटसन...। मुझे कोई सुराग तो नहीं मिला है।

मैरी : ये अमेरिका से आया है...। एकदम नई चीज है ये...इसे सेफ्टी रेज़र कहते हैं। तुम इससे हजामत बना सकते हो... और वो भी ब्लेड नजर आए बगैर।

वॉटसन : जरा देखो मैरी... इसे देखकर तो महान शरलॉक होम्स भी हैरत में पड़ गए।

होम्स : हूं... शुक्रिया मैरी..।

(पर्दा गिरता है / दर्शकों की तालियों की आवाज़)

नुपुर : वाह.. शानदार ...।

अभय : हां... मुझे भी काफी मजा आया।

नुपुर : वॉट्सन की सगाई के साथ शेरलॉक होम्स की कहानी का अंत...। ये तो काफी खास रहा।

अभय : वो देखिये... रंजन इधर ही आ रहे हैं। हमारे वॉटसन। **(पदचाप करीब आती हुई)** वाह रंजन...। आपने तो बहुत ही शानदार एक्टिंग की। **(हल्की हंसी के साथ)** आपकी जबरदस्त अदाकारी पर तो सभी लोग फिदा हो गए।

रंजन : शुक्रिया अभय जी..।

नुपुर : ये लीजिए...। पीछे-पीछे शरलॉक होम्स भी आ गए। आइये श्रीधर जी। हमारा सलाम कुबूल कीजिए। हमारी मैरी नज़र नहीं आ रही हैं ?

श्रीधर : बरखा तो अभी अपने अपार्टमेंट में गई है। बस कुछ ही देर में पहुंचने वाली होगी।

नुपुर : ओह...। अभी तो उसका यहां रहना जरूरी था। हम लोगों से अपनी तारीफ भी सुन लेती वो।

श्रीधर : लेकिन आप लोग मुझे फिलहाल इजाजत दीजिए। मुझे कुछ जरूरी काम से जाना पड़ रहा है।

अभय : ऑफिस से कोई काम आ गया क्या ? लेकिन होली में तो सारे ऑफिस बंद हैं।

श्रीधर : काम तो ऑफिस का ही है लेकिन मैं ऑफिस नहीं जा रहा हूं। इस काम को पूरा करने के लिए मुझे कुछ लंबे सफर पर निकलना है। दूसरे शहर का मामला है।

नुपुर : अपना ख्याल रखना...। **(हल्की हंसी के साथ)** राह चलते लोगों पर होली की खुमारी अब भी बाकी होगी।

श्रीधर : हाईवे तो सूनसान ही होगा। मुझे नहीं लगता कि कोई दिक्कत आएगी।

नुपुर : श्रीधर, हम लोगों के साथ डिनर ले लीजिए। डिनर के बाद चले जाना। **(मजाकिया अंदाज में)** ये मत सोचो कि वहां किसी तो तुम्हारी फिक्र होगी... भले ही तुम अब तक कुंवारे हो।

श्रीधर : नुपुर जी, मुझे फक्र है कि मैं इस सोसाइटी में रहता हूं। आप लोग इतना ध्यान रखते हैं मेरा। लेकिन फिलहाल मुझे जाना ही होगा। रुकने पर ज़ोर मत दीजिए। अभी चलता हूं। बाय...। **(पदचाप... दूर जाती हुई)**

TRANSITION MUSIC / SCENE CHANGE

(सुबह का वक्त है / रंजन अपने ऑफिस में है/ फोन की घंटी बजने की आवाज़ / रंजन फोन उठाता है)

रंजन : हेलो श्रीधर...। कहां हैं आप ? आप रात में ही कार से निकल गये थे तो हमें आपकी चिंता हो रही थी।

श्रीधर : (फोन पर आती आवाज़) ध्यान से सुनो रंजन। दरअसल कार चलाते वक्त एक एक्सीडेंट हो गया था।

रंजन : क्या कहा? एक्सीडेंट ! तुम ठीक तो हो ना..।

श्रीधर : हां.. हां .. मैं बिल्कुल ठीक हूं। चिंता की कोई बात नहीं है। हल्की-फुल्की चोट लगी है लेकिन कार के अगले हिस्से में बहुत ज्यादा टूट-फूट हुई है।

रंजन : लेकिन अभी कहां हो आप ?

श्रीधर : मैंने यहीं एक होटल ले लिया है। इसी शनिवार तक मैं वापस लौट आऊंगा। लेकिन मेरी आपसे एक गुजारिश है।

रंजन : बताओ श्रीधर...। संकोच मत करो।

श्रीधर : मैं कार के इंश्योरेंस की बात रहा हूं। आप तो जानते हैं कि बीमा कंपनियों से क्लेम लेना इतना आसान तो है नहीं। वो पूरी जिम्मेदारी हम पर ही थोपने की कोशिश करती हैं।

रंजन : वो तो है...। लेकिन ये बताओ की मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं।

श्रीधर : मैं आपको कुछ फोटोग्राफ ईमेल से भेजता हूं। आप किसी अच्छे स्टूडियो से उनके अच्छे प्रिंटआउट निकलवा लीजिएगा।

रंजन : ठीक है, ये हो जाएगा। उसके बाद ?

श्रीधर : उसके बाद आप बीमा कंपनी के दफ्तर से संपर्क कीजिए, वो आपके ऑफिस से ज्यादा दूर भी नहीं है। मैं आपको एक डॉक्यूमेंट और भेज रहा हूं। उसके प्रिंटआउट और फोटग्राफ्स को आप वहां जमा कर देना।

रंजन : ठीक है.. ये सब हो जाएगा। लेकिन मुझे ये समझ नहीं आ रहा है कि आप बीमा कंपनी के दफ्तर में सॉफ्ट कॉपी में क्यों नहीं भेज रहे हैं ?

श्रीधर : मैं चाहता हूं बीमा राशि का भुगतान कुछ जल्दी हो जाए। वैसे भी पैसे देने के मामले में चाल सुस्त ही रहती है। सॉफ्टकॉपी तो मैं भेज चुका हूं और आप भी खुद वहां जाएंगे तो शायद काम तेजी से हो जाए।

रंजन : समझ गया। मुझसे जो भी बन पड़ेगा, जरूर करूंगा। आप अपना ख्याल रखना।

श्रीधर : ठीक है...। बाकी बातें वापसी पर होंगी। बाय...।

(फोन रखने की आवाज़)

TRANSITION MUSIC / SCENE CHANGE

(बीमा कंपनी का दफ्तर / कंपनी का एक्ज़ीक्यूटिव (सुनील गर्ग, 45 वर्ष) **श्रीधर के बीमा क्लेम के बारे में रंजन से बात चर्चा कर रहा है। रंजन के साथ में बरखा भी है।**)

सुनील : रंजन जी, हम लोग अपना काम कर रहे हैं लेकिन आपको तो हम पर भरोसा ही नहीं है।

रंजन : हमें आप पर पूरा भरोसा है सुनील जी। लेकिन हमने देखा है कि बीमा कंपनियां अक्सर दावों का निपटान करने में ढीला रवैया ही अपनाती हैं।

बरखा : कई बार तो कंपनियां मामूली रकम देकर मामले को निपटा देती हैं।

सुनील : देखिए, मैं दूसरी कंपनियों की जिम्मेदारी तो नहीं ले सकता, मैडम...

(बात पूरी होने से पहले ही टोकते हुए)

बरखा : बरखा बोस। मैं बरखा हूं और हम लोग एक ही सोसाइटी में रहते हैं।

सुनील : बरखा जी। हमारी कंपनी अपने ग्राहकों के भरोसे पर पूरी तरह से खरा उतरने की कोशिश करती है। लेकिन कई मामलों में कार मालिक भी दावा हासिल करने का सही तरीका नहीं अपनाते हैं।

रंजन : आपकी बात सही है सुनील जी, लेकिन श्रीधर का कहना है कि उन्होंने तो सभी औपचारिकताएं कर ली हैं। उन्होंने हादसे वाली जगह के फोटोग्राफ भी आपको भेजे हैं और

लोकल पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट भी दर्ज कराई है। सबकी सॉफ्ट कॉपी आपके पास है और प्रिंटआउट की जरूरत हुई तो वो मैं साथ में लेकर आया हूं।

सुनील : लेकिन रंजन जी, इन फोटोग्राफ्स में आपकी दोस्त की कार को हुए नुकसान की पूरी डिटेल नहीं है। इनसे ये भी पता नहीं चल पा रहा है कि थर्ड पार्टी को कितना नुकसान हुआ होगा।

बरखा : थर्ड पार्टी ?

सुनील : जी हां... थर्ड पार्टी यानी वो कार जिससे श्रीधर जी की कार टकराई थी। इन सब जानकारियों के बगैर हम आगे की कार्रवाई कैसे कर सकते हैं। अगर हादसे के वक्त का सीसीटीवी फुटेज मिल जाता तो बहुत अच्छा रहता।

रंजन : लेकिन उस छोटे से कस्बे की हर रोड में सीसीटीवी कैमरा होने की उम्मीद तो कम ही है।

सुनील : आपका कहना सही है सर लेकिन ऐसी फुटेज के बगैर हमारा काम ज्यादा मुश्किल हो जाता है।

बरखा : तो फिर अब क्या होगा ? (कुछ गुस्से में) क्या आप इस दावे को खारिज कर देंगे ?

सुनील : धैर्य रखिए मैडम। इतना जल्दी निराश होने की जरूरत नहीं है। हमारी कंपनी पूरी कोशिश करेगी की सच्चाई का पता चल जाए।

बरखा : लेकिन ये सब आप कैसे करेंगे। क्या हादसे वाली जगह पर पड़ताल के लिए आपकी कोई टीम जाएगी ?

सुनील : सॉरी मैडम। आज के दौर में हमारे पास इतनी मैनपॉवर नहीं है। हालांकि हमने कुछ खास ऐजेंसियों को ऐसी पड़ताल के लिए आउटसोर्स किया हुआ है। लेकिन यहां भी श्रीधर जी ने भी एक बड़ी गलती कर दी। उन्होंने अपनी कार को हादसे वाली जगह से हटाकर दूसरी जगह पर पहुंचा दिया है।

रंजन : श्रीधर ऐसा नहीं करते तो फिर क्या करते। क्या उन्होंने कार को उसी सुनसान जगह पर छोड़ देना चाहिए था ? ऐसे में तो कार का पुर्जा-पुर्जा चोरी हो जाता।

सुनील : आपकी बात सही है रंजन जी। ऐसे हालात में ही तो एआई यानी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का फायदा है।

बरखा : (चौंकते हुए) एआई ! ये तो साइंस फिक्शन का मसाला है।

सुनील : बरखा जी, अब ये सिर्फ साइंस फिक्सन का मसाला नहीं रहा। हमारी कंपनी का दुनिया की मशहूर कंपनी के साथ करार है जो कि अपनी बेहतरीन एआई मशीन की बदौलत भूसे के ढेर में से भी सुई को खोज सकती है। आइये मैं आपको दिखाता हूं।... वैसे, आप लोग चाय तो लेते ही होंगे..। थौड़ी चाय चलेगी ?

रंजन : हां.. हां... जरूर।

सुनील : (कुछ ऊंचे स्वर में) रघू भैया...। जरा तीन कप चाय तो लेकर आइए। हम लोग साइबर रूम में जा रहे हैं। **(सामान्य स्वर में)** आइये सर... मेरे साथ आइए। आइये मैडम।

(पदचाप / तीनों साइबर रूम में जाते हैं/ कुछ खास किस्म का संगीत जो एडवांस टेक्नॉलोजी के अनुभव का आभास दे।)

सुनील : आइये प्लीज..। आप दोनों अंदर आइये। ये हमारा साइबर रूम है... **(परिचय के अंदाज में)** और आप हैं सविता जी.. सिस्टम एक्सपर्ट। जबसे हमने वॉटसन एआई सिस्टम खरीदा है, सविता जी ही ग्राहकों को समझाती हैं कि हम कितनी ज्यादा पारदर्शिता के साथ काम करते हैं। **(हल्की हंसी के साथ)** उनका तो रोज ओवरटाइम ही हो जाता है। सविता जी, मैं तो लगातार बोले ही जा रहा हूं। जरा आप हमारी जांच-पड़ताल के तौर-तरीके के बारे में बता दीजिए।

सविता : हां.. हां... क्यों नहीं सुनील जी...। जरूर।

बरखा : (फुसफुसाते स्वर में) रंजन जी। ये लीजिए यहां भी एक वॉटसन हाजिर हैं, लेकिन शेरलॉक होम्स के बगैर।

सुनील : मैं जरा अपना काम निपटाता हूं। तब तक आप लोग सविता जी से चीजों को समझ लीजिए।

रंजन : ठीक है...। बाय..।

सुनील : चाय भी बस आने ही वाली होगी। चाय की चुस्कियां भी लेते रहिएगा। बाय...।

सविता : बाय...। **(रंजन और बरखा से मुखातिब होते हुए)** आप दोनों बैठिए प्लीज़। देखिये, यहां पर आपको सिर्फ कुछ मॉनीटर दिखाई दे रहे हैं। लेकिन इस पूरे सिस्टम की रीढ़ तो कहीं और ही है।

रंजन : लेकिन यहां बैठकर भला कोई इस हकीकत का कैसे अंदाजा लगा लेगा कि हादसे वाली जगह पर क्या हुआ है ? ये तो बहुत हैरानी की बात है।

सविता : सर इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है। आजकल तो ये बहुत ही सामान्य है। इसके काम के तरीके को समझने से पहले मैं थौड़ा सा आपको एआई (AI) सिस्टम के बारे में बता दूं। एआई यानी आर्टिफीशियल इंटेलीजेंट के बारे में तो आपने सुना ही होगा। आजकल गेम शोज़ में भी इसका काफी इस्तेमाल होता है। अमेरिका में ऐसा ही एक मशहूर टेलीविज़न गेम शो है "जेपार्डी" (Jeopardy).

बरखा : हां.. हां...। मैंने उसके कुछ एपीसोड यूट्यूब में देखे हैं। दरअसल ये एक कुछ अलग किस्म का क्विज़ शो ही है।

रंजन : मुझे तो इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है।

सविता : मैं समझाती हूं सर। इस क्विज़ शो में शामिल होने वाले प्रतिभागियों के सामने सामान्य ज्ञान की बातें जवाब के तौर पर पेश की जाती हैं। इनके आधार पर प्रतिभागियों को उससे संबंधित सवाल गढ़ने होते हैं।

रंजन : अच्छा ! अब समझा। यानी एक तरह का उल्टा क्विज़।

सविता : बिल्कुल सही कहा सर। दुनिया की मशहूर आईटी कंपनी आईबीएम (IBM) ने एक ऐसी मशीन तैयार की जो सवालों के जवाब देने के साथ-साथ सवाल भी गढ़ सके। कंपनी ने इस

मशीन का नाम अपने पहले सीईओ थॉमस वाटसन के नाम पर रखा। थामस वाटसन अपने दौर के मशहूर उद्योगपति रहे हैं।

बरखा : (रंजन से मुखातिब होकर धीमे स्वर में) मतलब, ये वो वॉटसन नहीं है जिसकी अदाएं आपने स्टेज में दिखाई थीं।

रंजन : अरे बस भी करो..।

सविता : मैंने कुछ गलत कह दिया क्या सर ?

रंजन : नहीं... नहीं...। आप बताइये प्लीज़।

सविता : जी..। वॉटसन ने सन दो हजार ग्यारह (2011) में "जेपार्डी" (Jeopardy) शो में शिरकत की और दस लाख डॉलर का पहला इनाम जीता।

बरखा : वाह..। शानदार।

रंजन : तो आप लोग उसी क्विज़ मशीन का इस्तेमाल यहां कर रहे हैं।

सविता : (हल्की हंसी के साथ) नहीं- नहीं...। ये आन्सरिंग मशीन से कहीं बढ़कर है। इसे एडवान्स्ड नेचुरल लैंग्वैज प्रोसेसिंग (advanced natural language processing), ऑटोमेटेड रिज़निंग (automated reasoning) जैसे मकसद के लिए बनाया गया था। इसके साथ ही इसे बनाने से पीछे सूचनाओं को फिर से हासिल करने और मशीन लर्निंग तकनीक का इस्तेमाल ज्यादा सटीक तरीके से करना भी था।

बरखा : उफ...। इतने भारी-भरकम शब्द तो मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहे हैं।

सविता : सॉरी मैडम। मैं कुछ आसान तरीके से बताती हूं। देखिए, ये मशीन हमारी बोली हुई बात को समझ सकती है और उसके मुताबिक काम कर सकती है।

(रघु का चाय लेकर प्रवेश होता है। रघु का स्वर - **चाय मैडम**)

सविता : शुक्रिया रघु। आप चाय वहीं पर रख दीजिए। हम खुद ही ले लेंगे।

बरखा : (चाय का एक कप उठाते हुए) शुक्रिया।

सविता : जी, हमलोग बात कर रहे थे वॉटसन की। गेम शो जीतने वाली इस मशीन को बाद में दूसरी कई जरूरतों के मुताबिक फिर से तैयार किया गया है। इसका इस्तेमाल सरकारी और निजी शोध संस्थानों, टेलीकम्यूनिकेशन कंपनियों, संगीत आधारित वेबसाइट्स और टेलीमेडीसन के साथ-साथ दूसरे कई क्षेत्रों में किया जा रहा है। बीमा कंपनियां भी इस तकनीक का बेहतरीन इस्तेमाल कर रही हैं।

रंजन : ठीक है। ये तो समझ में आ गया। लेकिन आप लोग इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं ?

सविता : इसे समझने के लिए तो हमें फिर से आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस (Artificial Intelligence) के मुद्दे पर ही आना होगा। हमारी इस मशीन को ऐसी ट्रेनिंग दी गई है कि वो तस्वीरों की तुलना कर सके।

बरखा : तस्वीरों की तुलना ! लेकिन श्रीधर ने तो बहुत ज्यादा फोटोग्राफ्स भेजे ही नहीं थे।

सविता : उनकी तस्वीरों से हम ये पता लगाएंगे की वाहन को कितना नुकसान पहुंचा है। हम श्रीधर के कार के ऑरिजनल मॉडल की कुछ ऐसी तस्वीरें हासिल करेगे जिस पर कोई टूटफूट नहीं हुई हो। ऐसी तस्वीरें आसानी से मिल ही जाती हैं। फिर हम दोनों तस्वीरों की तुलना करेंगे।

रंजन : मेरी समझ में अब कुछ-कुछ आने लगा है।

सविता : (हल्की हंसी के साथ) ये तो अच्छी बात है। हमारी इस एआई मशीन को कुछ इस तरह से प्रशिक्षित किया गया है कि वो अपने दम पर इस बात का फैसला ले सके कि कार को नुकसान कैसे पहुंचा होगा। अब चाहे इसमें कार ड्राइवर की गलती रही हो या फिर अचानक हुआ कोई हादसा।

बरखा : (हैरत भरे अंदाज में) आपका कहने का मतलब है कि बीमा कंपनियां इस तरह के फैसले लेने के लिए ऐसी एआई मशीनों पर निर्भर हैं ?

सविता : जी, बिल्कुल। देखिए ये मशीन लाखों दस्तावेजों को चुटकियों में समझ सकती है। इसकी काबिलियत का अंदाजा आप ऐसे लगा सकते हैं कि ये मशीन अस्सी (80) करोड़ पेजों के आंकड़ों को एक सेकंड में ही पढ़ लेती है। ऐसी मशीनों की बदौलत बिखरी हुई कड़ियों को जोड़कर नतीजा निकालना आसान हो जाता है।

रंजन : लेकिन फोटोग्राफ्स से भला हकीकत का पता कैसे चलेगा ?

सविता : देखिए, मैं आपको कुछ दिखाती हूं। इधर इस मॉनीटर में देखिए। इसमें ग्राफिक्स के जरिए ये बताया गया है कि हमारी एआई मशीन पूरे हालात को किस तरह से समझती है।

रंजन : अच्छा।

सविता : यहां पर आप देख सकते हैं कि ये मशीन किस तरह से तस्वीरों के डेटा के छोटे से हिस्से को उठाती है और फिर उसकी तुलना कार के ऑरिजनल मॉडल की तस्वीर से करती है।

रंजन : ये तो गजब की मशीन है।

सविता : बिल्कुल सही कहा आपने।

बरखा : लेकिन इसका क्या फायदा...। मेरा मतलब कि आम ग्राहक को इससे क्या फायदा है।

सविता : सबसे बड़ा फायदा तो यही है कि बेहद कम वक्त में ही बीमा के दावों का निपटान हो जाता है। लेकिन हमें पूरे दस्तावेज चाहिए, बस।

रंजन : अच्छा है। वापसी में ये बातें हम श्रीधर को जरूर बताएंगे। **(हल्की हंसी से साथ)** उम्मीद है कि इस बेमिसाल मशीन से श्रीधर को भी फायदा जरूर होगा।

सविता : सर, जब तथ्यों को पूरी ईमानदारी के साथ पेश किया जाता है तो ये मशीन भी तेजी से अपना हुनर दिखाती है। और इससे ग्राहक को फायदा जरूर होता है। मेरे ख्याल से मैंने आप दोनों का काफी वक्त ले लिया। जरूरी लगे तो आप कभी भी यहां आ सकते हैं।

रंजन : जी जरूर। फिलहाल हम दोनों को इजाजत दीजिए...। बाय....।

सविता : ओके... बाय...।

TRANSITION MUSIC / SCENE CHANGE

(रविवार की शाम / आराधना कॉम्पलेक्स के सामुदायिक केंद्र में लोग बातचीत कर रहे हैं)

अभय : श्रीधर, अब तो आप एकदम से ठीक होंगे? चोट कैसी है?

श्रीधर : काफी हद तक ठीक हूं, लेकिन मुझे बीमा क्लेम की फिक्र हो रही है। बीमा कंपनी ने रंजन और बरखा के सामने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को लेकर लंबा-चौड़ा डेमो तो दिया था। लेकिन उसकी हकीकत तो वो ही जानें...।

नुपुर : कुछ तो भरोसा रखो श्रीधर। ये भले ही नैरो आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (narrow artificial intelligence) के उदाहरण हों लेकिन इस तकनीक की ताकत पर तुम्हें शक नहीं करना चाहिए।

बरखा : नुपुर, तुम इसे नैरो आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कह रही हो ? कंपनी के सिस्टम एक्ज़ीक्यूटिव की बातों से तो लग रहा था कि वो मशीन खुद के दम पर ही बेहिसाब काम कर सकती है।

नुपुर : (हल्की हंसी के साथ / नाटकीय अंदाज में) आप लोग मुझे इजाजत दें तो एक सॉफ्टवेयर प्रोफेशनल की हैसियत से मैं कुछ बताना चाहूंगी। शायद इससे बातों को समझने में कुछ आसानी हो। देखिये, केलिफोर्निया के मेनलो पार्क में SRI इंटरनेशनल (SRI International) नाम की एक कंपनी है...।

रंजन : (बीच में टोकते हुए) और आप यहां उसका प्रचार करना चाहती हैं...।

नुपुर : अरे नहीं... बिल्कुल नहीं। ये तो एक गैर-लाभकारी कंपनी है जिसे स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के लोगों ने शुरू किया। इस कंपनी को स्थापित करने के पीछे मकसद ये था कि आर्थिक विकास के क्षेत्र में कुछ नई गतिविधियां... कुछ नवाचार हो सकें।

रंजन : (व्यंग्यात्मक लहजे में) श्री हो या फिर श्रीमती... इस कंपनी का श्रीधर के बीमा क्लेम से भला क्या लेना-देना ?

नुपुर : इतनी बेसब्री मत दिखाओ रंजन...। मैं वही तो बताने की कोशिश कर रही हूं। जरा मेरी पूरी बात सुन लो। SRI (एसआरआई) का मतलब है स्टैनफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट। इस कंपनी ने एक ऐसा प्रोजेक्ट शुरू किया जो आज हमारे लिए बहुत ज्यादा मददगार साबित हो रहा है।

बरखा : (हैरत से) हमारे लिए मददगार !

नुपुर : बिल्कुल। SRI International ने इस सदी की शुरूआत में अमेरिकन रक्षा ऐजेंसियों के लिए आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस पर आधारित एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट शुरू किया। इस प्रोजेक्ट को

"Cognitive Assistant that Learns and Organizes" नाम दिया गया। यानी समझदारी भरा एक ऐसा सहायक को चीजों को सीखे भी और व्यवस्थित भी रखे। इस प्रोजेक्ट को संक्षेप में "केलो" (CALO) कहा गया।

अभय : वाह... "के...लो" ! क्या नाम है!

नुपुर : बस भी करो अभय... तुम्हें तो हर वक्त बस मजाक ही सूझती है। लगे हाथ ये भी जान लो कि CALO एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ होता है सैनिक का नौकर।

अभय : तो क्या हुआ...। **(मजाकिया अंदाज में)** समुद्र मंथन से निकला था क्या वो...।

नुपुर : अगर आप एआई यानी आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस के जन्म की कहानी जानना चाहते हैं तो मैं बताती हूं। दरअसल इसकी शुरुआत के कई पहलू हैं। इससे जुड़ी एक बहुत अहम चीज तो तुम्हारे हाथ में ही है।

अभय : (चौंकते हुए) मेरे हाथ में ! मेरे हाथ में तो सिर्फ मेरा एप्पल आईफोन है।

बरखा : बिल्कुल...। नुपुर पहेलियां मत बुझाओ....। तुम कहना क्या चाहती हो ?

नुपुर : मैं इस फोन के बारे में ही बात कर रही हूं। ये तो आपको पता ही है कि आईफोन में सीरी (Siri) इंटेलीजेंट सॉफ्टवेयर असिस्टेंट जरूर रहता है। और आप लोग अक्सर इसका इस्तेमाल भी करते ही हैं।

अभय : हां...। लेकिन मुझे ये मालूम नहीं था कि इसके पीछे इतनी लंबी-चौड़ी कहानी है।

नुपुर : "सीरी" से आप बात कर सकते हैं, इसे कोई आदेश दे सकते हैं और ये बेचारा हमेशा आपकी सेवा में तैयार रहता है...। बिल्कुल अलादीन के चिराग से निकले जिन्न की तरह।

अभय : लेकिन इसका जवाब अक्सर काफी सपाट सा.. या फिर रटा-रटाया रहता है। अगर कभी इससे कुछ मुश्किल सवाल कर दिए जाएं तो ये फिर बेतुके जवाब देने लगता है।

नुपुर : बताती हूं...। बरखा तुम भी ध्यान से सुनो.। इसीलिये इस एआई सिस्टम को नैरो एआई (Narrow AI) कहा जाता है। बीमा कंपनी के दफ्तर में भी जो एआई सिस्टम था वो भी नैरो

एआई सिस्टम का ही उदाहरण है। कई वर्षों के बाद ऐसे एआई सिस्टम को ज्यादा काबिल बनाया जा सका है लेकिन फिर भी इसकी अपनी सीमाएं हैं।

श्रीधर : तो फिर ये नैरो एआई सिस्टम कब जाकर ज्यादा व्यापक बन सकेंगे... मेरा मतलब है कि वाइड एआई (Wide AI)।

नुपुर : (हल्की हंसी के साथ) श्रीधर बाबू... यहां आप कुछ गलत बोल गए। नैरो एआई का उलट होता है जनरल एआई (General AI)। इसे आप स्ट्रांग एआई (Strong AI) भी कह सकते हैं।

श्रीधर : चलिए मैंने अपनी नासमझी कुबूल कर ली...। लेकिन ये तो बताओ कि इस स्ट्रांग एआई के दर्शन कब तक होंगे ?

नुपुर : (कुछ मायूसी के साथ) हाल-फिलहाल में तो मुझे इसकी कोई उम्मीद नजर नहीं आती।

श्रीधर : लो कर लो बात...। कहां तो हम लोग उम्मीद कर रहे थे कि तुम हमें किसी ऐसे सिस्टम के बारे में बताओगी जो "सुपर ह्यूमन इंटेलीजेंस" जैसी ताकत से लैस हो...। लेकिन तुमने तो बस हथियार ही डाल दिए नुपुर।

नुपुर : देखिए श्रीधर जी, कुदरत की दी हुई इंसानी बुद्धिमत्ता को पूरी तरह से समझ पाना ही काफी मुश्किल है। और फिर आर्टिफीशियल तरीके से उस जैसा सिस्टम बना पाना तो बहुत दूर की बात है। एक ऐसी मशीन, जो बिल्कुल इंसानी दिमाग की तरह काम करे... वो तो फिलहाल हकीकत से दूर ही है।

(श्रीधर के फोन की घंटी बजती है / श्रीधर फोन उठाता है)

श्रीधर : जी हां..। मैं श्रीधर ही बोल रहा हूं। अच्छा... अच्छा...। बीमा कंपनी से। आप लोग छुट्टी के दिन भी काम कर रहे हैं...। जी... जी...। मैं समझ गया। कब... बीमा का क्लेम...। जी बहुत-बहुत शुक्रिया..। जी पक्का...। बारह बजे से पहले। बाय..।

(श्रीधर फोन रखता है)

अभय : लगता है श्रीधर को कोई खुशखबरी मिली है।

श्रीधर : (खुशी से) बिल्कुल...। बीमा कंपनी ने मेरे क्लेम के मामले को सुलझा लिया है। हादसे के बाद मैंने बीमा की जिस रकम का दावा किया था, कंपनी उसका नब्बे (90) प्रतिशत देने को राजी हो गई है।

नुपुर : वाह...। ये तो बड़ी अच्छी बात है।

रंजन : (खुशी भरे अंदाज में) इसका मतलब हुआ कि नैरो आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस ने हमारे हक में ही काम किया है ?

श्रीधर : बिल्कुल...। ऐसा ही लगता है। मुझे भी दोपहर से पहले ही उनके दफ्तर में पहुंचना होगा... ताकि बाकी कागजी कार्यवाही पूरी हो सके।

नुपुर : (हल्की हंसी के साथ) जाइये श्रीधर बाबू... जल्दी जाइये...। नैरो एआई की बदौलत हासिल हुई रकम को जल्दी से कब्जे में ले लीजिए...।

(समवेत हंसी का स्वर)

----------CLOSING MUSIC----------